e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, रविवार, 7 जनवरी 2018, माघ मास कृष्ण पक्ष षष्ठी, संवत् 2074 विक्रमी वर्ष-11, अंक-85, पृष्ठ-16, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

website : www.dnahindi.com

शब्द शब्द संघर्ष

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982

डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18

संस्करण : लखनऊ ■ इलाहाबाद

14 टीम इंडिया की उम्मीदें बरकरार

मध्यांतर

उत्तर भारत में शीत लहर

● प्रो. भरत राज सिंह

brsinghlko@gmail.com

वर्ष 2017 के नवंबर में उत्तर भारत में पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने के बाद ही शीत लहर चली थी। मौसम विभाग के मुताबिक पश्चिम से होनेवाले डिस्टरबेंस की वजह से कश्मीर घाटी में बर्फबारी होती है। इसके साथ यदि हवा का रुख उत्तर की तरफ हो तो उत्तर भारत में ठंड पड़ती है। बीते 15 दिसंबर को पहाड़ों पर हुई बर्फबारी और बारिश से आई ठंड के साथ शीतलहर ने भी आम जनजीवन की कठिनाई बढ़ा दी और मैदानी इलाकों में भी बर्फबारी का असर दिखने लगा था। दिल्ली-एनसीआर में भी कड़ाके की सर्दी का दौर शुरू हो गया था और राजस्थान के माउंट आबू में तो झील ही जम गई थी। इसी बीच उत्तराखंड में बीते मंगलवार को हुई बर्फबारी और बारिश के बाद पहाड़ से लेकर मैदान तक सर्दी का प्रकोप बढ़ गया और गुरुवार सुबह मैदानों में जबरदस्त कोहरा पसरा रहा। सर्द हवा से ठिठुरन बढ़ने के कारण अगले तीन दिन के लिए कोहरे को लेकर चेतावनी जारी की गई थी। हरिद्वार और उधमसिंह नगर में कोहरा तो पर्वतीय क्षेत्रों में पाला पड़ने की संभावना जताई गई। हिमाचल प्रदेश में तीन दिन तक लगातार बारिश व बर्फबारी के बाद गुरुवार को मौसम साफ हो गया। कड़ाके की ठंड के बाद आनेवाले दिनों में लोगों को राहत मिलेगी। बीते दिनों हुई बर्फबारी के बाद जनजातीय क्षेत्र में पटरी से उतरा जनजीवन अभी भी सामान्य नहीं हो पाया है। इन इलाकों में सड़कें बंद पड़ी हुई हैं जिससे दैनिक उपयोग की वस्तुओं की आपूर्ति भी नहीं हो पा रही है। चंबा जिले में अभी भी 26 सड़कों पर यातायात बहाल नहीं हो पाया है। वहीं 30 गांवों में तीन दिन से बिजली आपूर्ति ठप्प पड़ी हुई है। गुरुवार को केलंग का न्यूनतम तापमान -6.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

कश्मीर घाटी को देश के शेष हिस्सों से जोड़ने वाला श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग दो दिन लगातार बंद रहने के बाद एकतरफा यातायात के लिए खोल दिया गया। राजमार्ग को भी जवाहर सुरंग के निकट भारी बर्फबारी और कई जगहों पर भूस्खलन के चलते बंद कर दिया गया था। हाईवे पर दिनभर वाहन जम्मू से श्रीनगर की तरफ आते रहे। भूस्खलन वाले क्षेत्रों में कर्मियों की तैनाती की गई है। जम्मू को पुंछ से और पुंछ से कश्मीर को जोड़ने वाला मुगल रोड बर्फबारी के चलते पहले ही बंद है। वहीं कठुआ के चड्ढट्टर गाला पास से मंगलवार को बर्फीले तूफान में लापता तीन व्यक्ति बचाए गए हैं। जम्मू-कश्मीर के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फबारी का सिलसिला लगातार जारी रहने और तापमान के शून्य से नीचे बने रहने के चलते भीषण ठंड का प्रकोप फिर से बढ़ गया है।

मौसम

डल झील समेत सभी जलस्रोत व नल आंशिक तौर पर जम गए हैं। श्रीनगर में रात का न्यूनतम तापमान -1.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। गुलगर्म में रात का न्यूनतम तापमान -9.8 डिग्री तो पहलगाम में रात का न्यूनतम तापमान -6.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

मौसम का पूर्वानुमान बताने वाली वेदर वेबसाइट स्काई मेट के अनुसार कश्मीर, उत्तराखंड और हिमाचल में हुई बर्फबारी के कारण उत्तरी हवा का प्रभाव दिल्ली के मौसम को प्रभावित करेगा। इससे अधिकतम व न्यूनतम तापमान में गिरावट का दौर शुरू हो सकता है। अभी अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है, लेकिन आनेवाले दिनों में न्यूनतम तापमान में भी गिरावट होगी और ठंड का प्रभाव बढ़ेगा। हल्की बारिश सर्दी में इजाफा कर सकती है।

दरअसल, बीते 27 दिसंबर से ही देश के समूचे उत्तरी भागों में शीतलहर जारी है। शीतलहर का असर पूरे उत्तर भारत के साथ-साथ देश के कई अन्य स्थानों पर भी महसूस किया जा रहा है। हिमाचल में पारा 0.2 डिग्री तक पहुंच गया। शिमला, धर्मशाला, केलांग, पालमपुर सहित ऊंचाई वाले अन्य सभी इलाकों में शीतलहर चरम पर है। इसी के साथ देश के अन्य राज्यों में भी शीतलहर के बढ़ने के आसार हैं। इसी के साथ एक और खबर है कि देश के 91 प्रमुख जलाशयों का जल स्तर लगातार गिर रहा है। इनकी जल संचयन क्षमता 62 प्रतिशत हो गई है, जो पिछले सप्ताह तक 64 प्रतिशत थी। पिछले सप्ताह 101.77 अरब घनमीटर पानी था जो अब घटकर 98.57 अरब घन मीटर रह गया है। पिछले साल की तुलना में इन जलाशयों में इस समय तक पानी का स्तर काफी कम है। पूरे देश में हुई कम बारिश के कारण इन जलाशयों में शुरू से ही कम जल संचय हुआ है। पर्याप्त वर्षा न होने और लगातार जल दोहन के चलते आनेवाले दिनों में पानी की किल्लत होना संभावित है। इस समय पूरे देश में सिंचाई में भी पानी का उपयोग किया जा रहा है, हालांकि इस वर्ष देशभर में 65.70 प्रतिशत भूमि पर पानी की कमी के चलते फसल नहीं लगाई गई है।

बहरहाल, उत्तर भारत में शीतलहर ने कहर बरपाया है। कोहरे की वजह से हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में दृश्यता कम रही। जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में शीतलहर ने कहर बरपाया। इन राज्यों में कई जगहों पर न्यूनतम तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे रिकॉर्ड किया गया। उत्तर प्रदेश में कड़ाके की ठंड को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी जिला अधिकारियों को बेघर और गरीब लोगों के लिए पर्याप्त व्यवस्था करने के निर्देश दिए। सरकार ने अभी तक सात सौ से ज्यादा रैन बसेरे बनाए हैं, जिनका निरीक्षण मुख्यमंत्री स्वयं कर रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में हुई बर्फबारी के चलते यूपी के कानपुर, लखनऊ आदि शहरों में शीतलहर ने शहरवासियों को परेशान कर दिया। सुबह धूप जरूर निकली, पर हल्की बदली होने की वजह से किसी तरह की राहत नहीं मिली। सीएसए के मौसम वैज्ञानिकों का कहना था कि आनेवाले दो-तीन दिन तक इसी तरह का मौसम रहेगा। इसके बाद आसमान साफ होगा। यहां के मौसम विभाग में अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से आठ डिग्री सेल्सियस कम रहा। इसी तरह न्यूनतम तापमान 7 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड हुआ जो सामान्य से तीन डिग्री सेल्सियस कम था। अधिकतम आद्रता 98 फीसद और न्यूनतम आद्रता 49 फीसद मापी गई। हवाओं की गति सात किलोमीटर प्रति घंटा रही। इस समय पहाड़ों पर जो बर्फबारी हो रही है, वह निचले स्तर पर है। वहां से आनेवाली हवाएं ठंडक बढ़ा रही हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण निरंतर जलवायु में परिवर्तन हो रहा है। हमारी ऋतुएं भी बदल रही हैं। विकास की गति बढ़ाने में प्रकृति का ध्यान न देकर वृक्षों को जंगलों से काटना शुरू कर दिया और जलाशयों को पाटकर जमीन का उपयोग या तो खेती के लिए या कॉलोनी बसाने में लगा दिए। बिजली व वाहनों की आवश्यकता हेतु कोयले, पेट्रोल-डीजल, गैस का अनियंत्रित ढंग से दोहन कर पूरे पारितंत्र को उलट-पलट दिया गया जिससे ऋतुओं के समय में परिवर्तन हो गया। दूसरी तरफ ग्लेशियर के पिघलने और शीतकाल में पुन: उस ऊंचाई तक न जमने से मैदानी इलाके में बारिश नहीं हो पा रही है। जब भी पहाड़ियों पर बर्फ पड़ती है, वह नीचे खसक जा रही है। मैदानी इलाके इस तरह प्रत्येक वर्ष शीतलहर की चपेट में आ रहे हैं। यहां तक कि रेगास्तानी इलाकों में भी अब बर्फ जमने लगी है। हमारे पास एकमात्र उपाय प्रकृति, पर्यावरण, पानी व पेड़-पौधों के महत्व को गहराई से समझने का है। हमें संवेदनशील होकर इनसे सान्निध्य स्थापित करना होगा। जिस पृथ्वी को हम माता कहते हैं, जब हरीभरी होगी तो पर्यावरण स्वस्थ होगा, पानी की प्रचुरता से प्रकृति अपने पूर्व स्वरूप में तभी आ सकती है।